रुचिरा

कक्षा – 6,   विषय – संस्कृत

धातुरूपाणि

पठ्, गम्, नी (लट् लकार)

श्रीमती प्रतिभा रोकड़े

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-3, तारापुर
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (हिन्दी / संस्कृत)

धातु रूप सामान्य परिचय

- संस्कृत व्याकरण में क्रियाओं के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातु ही संस्कृत शब्दों के निर्माण के लिए मूलतत्त्व (कच्चा माल) है। धातुओं के साथ उपसर्ग, प्रत्यय मिलकर तथा सामासिक क्रियाओं के द्वारा सभी शब्द(संज्ञा,सर्वनाम,क्रिया आदि) बनते हैं। दूसरे शब्द में कहें तो संस्कृत का लगभग हर शब्द अन्ततः धातुओं के रूप में तोड़ा जा सकता है। पठ्, गम्, नी, कृ, भू, स्था, अन्, ज्ञा, युज्, गम्, मन्, जन्, दृश् आदि कुछ प्रमुख धातुएँ हैं।

लकार

लकार: काल को संस्कृत में लकार कहते हैं। जब कोई भी कार्य किसी समय करते हैं या कोई कार्य किसी समय किया जा चुका होता है अथवा कोई कार्य आगे किसी समय करना होता है तो उसे हिंदी में काल और संस्कृत में लकार कहते हैं।

लट् लकार: लट् लकार **वर्तमान काल** को कहते हैं ।

पठ् (पढ़ना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यमपुरुषः	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तमपुरुषः	पठामि	पठावः	पठामः

गम्-गच्छ (जाना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यमपुरुषः	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तमपुरुषः	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

© NCERT not to be republished

नी-नय् (लेना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नयति	नयतः	नयन्ति
मध्यमपुरुषः	नयसि	नयथः	नयथ
उत्तमपुरुषः	नयामि	नयावः	नयामः

धन्यवाद